हिन्दी नाटक की अभिनय तथा रंगमंचीय परम्परा

डॉ० गार्गी सिंह

'अभिनय' नाट्य–प्रदर्शन का मूलभूत तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व होता है नाट्य प्रयोग अभिनय के द्वारा ही सिद्ध होता है। अभिनय के अन्तर्गत समस्त नाट्यकर्म समाहित हो जाता है। इसी के द्वारा 'काव्य'–'नाट्य' बनता है। अभिनय में ही नाटक के प्राण रस का उन्मेष होता है। अभिनय के द्वारा ही नट–नटी, विभाव, अनुभाव और संचारियों द्वारा रस–निष्पत्ति में सहायक बनाते हैं। 'णी' धातु में 'अभि' उपसर्ग लगाने से 'अभिनय' शब्द बनता है। अभिनय से तात्पर्य है– नाट्य प्रयोग के द्वारा मुख्यार्थ को सामाजिक के हृदय तक पहुँचाना और विभावन कराना अर्थात् रसास्वाद कराना।

अभिनय नाट्य–कृति को रूपायित करता है अतः वही नाटक का वाहक होता है इसी कारण अभिनय करना एक सृजनशील स्थिति होती है। नाटक के संवादों को प्रभावपूर्ण ढ़ंग से व्यक्त करने के साथ ही अभिनेता नाटककार की मूलभूत अनुभूति को उसकी व्यक्त–अव्यक्त संभावनाओं के साथ उद्घाटित करता है नाट्य भ्रांति अभिनय द्वारा ही उत्पन्न की जाती है।